Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 10, Issue 1 - 2025, Pg. No. 12-14
Peer Reviewed Journal

Review Article

# कोरोना काल में भारतीय साहित्य और शिक्षा की दशा और दिशा

Chaman Singh Thakur

Ph.D. Education M.A. Hindi M.A. Pol. Science M.A. Yoga M.ED. PGDHE

## I N F O

**E-mail Id:**
Prof.chaman2019@gmail.com
**Orcid Id:**
https://orcid.org/0009-0003-3814-2995

*Date of Submission: 2025-04-05*
*Date of Acceptance: 2025-05-12*

## सारांश

कोविड–19 वैश्विक महामारी ने न केवल मानवीय जीवन को अस्त–व्यस्त किया, बल्कि साहित्य और शिक्षा जैसे समाज के महत्वपूर्ण स्तंभों को भी गहराई से प्रभावित किया। इस संकट के समय में भारतीय साहित्यकारों और शिक्षाविदों ने अपनी लेखनी और सृजनशीलता के माध्यम से जनचेतना का संचार किया और समाज को नई दिशा प्रदान की। साथ ही, शिक्षा प्रणाली में डिजिटल माध्यमों को अपनाकर शिक्षण–अधिगम की निरंतरता को बनाए रखा गया। इस शोधपत्र में कोरोना काल में साहित्य की भूमिका, साहित्यिक आयोजनों की प्रभावशीलता, शिक्षा व्यवस्था में हुए नवाचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावों पर विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से चर्चा की गई है।

**मुख्य शब्द:** कोरोना काल, भारतीय साहित्य, ऑनलाइन शिक्षा, जनचेतना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सामाजिक जागरूकता, साहित्यिक योगदान, वेबिनार, संकट प्रबंधन

## प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण होता है और यह राष्ट्र निर्माण की दिशा में मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। जब–जब राष्ट्र पर संकट आया, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से समाज को न केवल संवारा, बल्कि उसे दिशा देने का कार्य भी किया। कोरोना महामारी जैसे अभूतपूर्व संकट के समय में साहित्य और शिक्षाकृदोनों ही क्षेत्रों में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गई, और भारत ने इस चुनौती को अवसर में बदलने का प्रयास किया।

कोविड–19 वैश्विक महामारी ने मानव समाज के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया। चिकित्सा, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संबंधों और जीवनशैली के साथ–साथ साहित्य और शिक्षा जैसे कोमल लेकिन प्रभावशाली क्षेत्रों पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। इस संकटकाल में भारतीय साहित्य और शिक्षा ने अपनी पारंपरिक भूमिका से परे जाकर समाज को संभालने का दायित्व उठाया।[1]

जहाँ एक ओर साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से जन–चेतना का संचार किया, भय और निराशा से ग्रस्त जनमानस में आशा और सकारात्मकता का बीज बोया, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों, शैक्षणिक संस्थानों और नीतिनिर्माताओं ने शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया को जारी रखने हेतु ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को अपनाया। यह संक्रमणकाल शिक्षा और साहित्य दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण अवश्य रहा, परंतु इसके भीतर नवाचार, सृजन और आत्मचिंतन के अनेक अवसर भी निहित थे।

भारतीय साहित्यकारों ने इस दौर में कविता, कथा, निबंध, गीत और अन्य विधाओं के माध्यम से महामारी से उपजी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक समस्याओं को स्वर दिया। इन रचनाओं ने जनमानस को न केवल आत्मचिंतन की ओर प्रेरित किया, बल्कि उन्हें सामूहिक उत्तरदायित्व और मानवता के मूल्यों की ओर भी उन्मुख किया।

वहीं, शिक्षा के क्षेत्र में 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' का आगमन इस संक्रमणकाल में एक ऐतिहासिक पहल साबित हुई, जिसने शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और बहु–विशयी बनाने की दिशा में नई संभावनाएं खोलीं।

इस समीक्षा पत्र में हम कोरोना काल में साहित्य और शिक्षा दोनों की दषा और दिशा का समग्र विश्लेषण करेंगे। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि इस संकट ने किस प्रकार इन


*Copyright (c) 2025: Author(s). Published by Advanced Research Publications*

दोनों क्षेत्रों को एक नए युग में प्रवेश कराया, और किस हद तक इन दोनों ने भारतीय समाज को सहारा प्रदान किया।[2, 3]

## कोरोना काल में साहित्य की भूमिका:

कोरोना महामारी केवल एक जैविक संकट नहीं था, यह एक सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक आपदा भी थी। जब लोग भय, अकेलेपन और अनिश्चित भविष्य की आशंका से घिरे थे, तब साहित्य ने भावनात्मक सहारा बनकर जनमानस को न केवल सांत्वना दी, बल्कि सामाजिक जागरूकता और जिम्मेदारी का बोध भी कराया। इस कठिन समय में साहित्य ने अपनी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को पुनः सिद्ध किया।

## जनचेतना और मानसिक संबल:

महामारी के समय जनता भय, तनाव और असहायता से जूझ रही थी। साहित्यकारों ने कविता, कहानियों, संस्मरणों, लेखों और लेखनी के अन्य माध्यमों से एक ओर जहाँ लोगों की पीड़ा को स्वर दिया, वहीं दूसरी ओर आषा, धैर्य और करुणा जैसे मूल्यों को सषक्त किया। इन रचनाओं ने मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाला और लोगों को भावनात्मक समर्थन प्रदान किया।

## सामाजिक जागरूकता का माध्यम:

कई साहित्यिक रचनाएँ कोरोना वायरस की गंभीरता, संक्रमण से बचाव के उपाय, सामाजिक दूरी, मास्क के उपयोग, वैक्सीनेशन जैसे विशयों पर केन्द्रित थीं। साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से आमजन को वैज्ञानिक तथ्यों से जोड़ते हुए अंधविश्वास और अफवाहों का खंडन किया। उन्होंने साहित्य को जन–जागरण के एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रयोग किया।

## बहुभाशिक साहित्य का योगदान:

भारत एक बहुभाशी देष है और कोरोना काल में हिंदी के साथ–साथ तमिल, बांग्ला, मराठी, उर्दू, पंजाबी, कन्नड़ आदि भाशाओं में भी सषक्त साहित्यिक सृजन हुआ। क्षेत्रीय भाशाओं में लिखे गए लेख, कविताएं, लघुकथाएं एवं लोकगीतों ने स्थानीय स्तर पर जनजागरूकता फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## डिजिटल मंचों पर साहित्य:

लॉकडाउन के कारण भौतिक आयोजन संभव नहीं थे, ऐसे में डिजिटल मंचों ने साहित्य को नई दिशा दी। हजारों राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन कवि सम्मेलन, साहित्यिक वेबिनार, वर्कशॉप्स आदि का आयोजन हुआ, जिसमें साहित्यकारों, विद्यार्थियों और आम पाठकों की भागीदारी ने साहित्यिक संवाद को जीवित रखा। यह एक नई साहित्यिक संस्कृति की शुरुआत थी।[4]

## साहित्यिक रचनाओं में महामारी का चित्रण:

कोविड–19 ने नई साहित्यिक प्रवृत्तियों को जन्म दिया। अनेक रचनाओं में लॉकडाउन की स्थिति, मानवीय संघर्ष, प्रवासी मजदूरों की पीड़ा, सामाजिक विशमता, बेरोजगारी, स्वास्थ्य तंत्र की विफलता जैसे मुद्दे उभरकर सामने आए। इससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्यकारों ने अपने समय की सच्चाई को आत्मसात कर, उसे सजीव अभिव्यक्ति दी।

## साहित्य और मानवीय मूल्य:

इस महामारी ने जब समाज को टुकड़ों में बाँटना शुरू किया, तब साहित्य ने उसे एकता, सहयोग, परोपकार और संवेदना के सूत्र में बांधने का कार्य किया। साहित्य ने मानवता को बचाने, एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति और सेवा की भावना को जगाने का कार्य भी किया।

## शिक्षा क्षेत्र में कोरोना का प्रभाव:

1. लॉकडाउन के कारण पारंपरिक शिक्षा पद्धति बाधित हुई और ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को तेजी से अपनाया गया।
2. डिजिटल प्लेटफॉर्म्स (Zoom, Google Meet, YouTube आदि) पर शिक्षण–अधिगम जारी रखा गया।
3. ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में संसाधनों की कमी चुनौती बनी, परन्तु षिक्षकों की संकल्पशक्ति ने इन बाधाओं को आंशिक रूप से दूर किया।

## नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:

1. कोरोना काल में प्रस्तुत की गई यह नीति भारत की शिक्षा व्यवस्था में ऐतिहासिक परिवर्तन लेकर आई।
2. बहु–विशयक शिक्षा, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, लचीलापन, कौशल आधारित पाठ्यक्रमों पर जोर आदि को प्राथमिकता दी गई।
3. यह नीति कोविड काल के बाद शिक्षा क्षेत्र को नई दिशा देने में सहायक सिद्ध हुई।

## आपदा में अवसर – साहित्य और शिक्षा का समन्वय:

1. साहित्य ने जनचेतना और भावनात्मक समर्थन प्रदान किया, वहीं शिक्षा ने नवाचारों और तकनीकी प्रयोगों को जन्म दिया।
2. दोनों ही क्षेत्रों ने मिलकर महामारी के संकट को संभालने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।[5,6]

## निष्कर्ष

कोरोना काल भारतीय समाज, साहित्य और शिक्षा के लिए एक अग्निपरीक्षा थी। इस कठिन समय में भारतीय साहित्यकारों और शिक्षकों ने अपनी रचनात्मकता और प्रतिबद्धता से समाज को मानसिक, बौद्धिक और नैतिक बल प्रदान किया। साहित्य ने न केवल जनमानस को सशक्त किया, बल्कि शिक्षा प्रणाली ने तकनीक के माध्यम से नई संभावनाओं के द्वार खोले। नई शिक्षा नीति और ऑनलाइन शिक्षण की व्यवस्था भारत को आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में एक ठोस कदम सिद्ध हुई। यह समय आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

## संदर्भ

1. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
2. विभिन्न साहित्यिक वेबिनारों की रिपोर्ट - IGNOU, Sahitya Akademi
3. "कोरोना काल का भारतीय साहित्य पर प्रभाव" - भारतीय भाशाओं का केंद्र, JNU
4. "कोविड–19 और शिक्षा: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य" - UNESCO Report 2020
5. आकाशवाणी विशेष वार्ता, साहित्य और कोरोना - AIR News Archives
6. "कोरोना और हिंदी साहित्य" - डॉ. विजय देव नारायण साही, हिंदी अकादमी